सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जी की आरती

ओ३म□जय गुरु टेऊँराम, स्वामी जय गुरु टेऊँराम।
पर उपकारी जगत उध□ारी, तुम हो पूरन काम।।ॐ।।

जब जब प्रेमिनि निज हित कारण, तुमको पूकारा ।। स्वामी ।।
तब तब गुरु अवतार धरे तुम, सबको निस्तारा ।।ॐ।।
प्रेम प्रकाशी मण्डलाचार्य, मन्त्र साक्षी सतन्नाम ।। स्वामी ।।
धर्म सनातन के प्रचारक, नीति निपुण अभिराम।।ॐ।।
□श वि□श में मण्डली लेकर, पावन □ उप□श ।। स्वामी ।।
आत्म रुप लखाया सबको, हरिया ताप क्लेश।।ॐ।।
पूरण अचल समाधी तेरी, सिध□ आसन ब्राजे ।। स्वामी ।।
रुप मनोहर सुन्□र लोचन, □खत मन राजे।।ॐ।।
आत्म स्थित वचन के पूरे, योगी इन्द्रियजती।। स्वामी ।।
परम उ□ारी धैर्य धारी, परम अगाध मती।।ॐ।।
धन धन मात पिता कुल तेरा, धन तव साधु सुजान ।। स्वामी ।।
धन वह □श जहाँ तुम जन्मिया, धन तव शुभ स्थान।।ॐ।।
सुर नर मुनि जन हरिजन गुनिजन, गावन गुन तुम्हरे ।। स्वामी ।।
अन्त न पाइ सके नर कोई, महिमा अपर परे।।ॐ।।
जो जन तुम्हरी आरती गावे, पावे सो मुक्ति ।। स्वामी ।।
साध सन्मति को हर□म □ीजे, पूरण गुरु भक्ती।।ॐ।।

ओ३म□जय गुरु टेऊँराम, स्वामी जय गुरु टेऊँराम,
पर उपकारी जगत उध□ारी, तुम हो पूरन काम।।ॐ।।

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्□ महाराज जी की आरती

ओ३म□जय गुरु सर्वानन्□, स्वामी जय गुरु सर्वानन्□,
धर्म कर्म का □ उप□शा, काटे यम के फन्□।।ॐ।।

तुम हो □ाता □ीन □यालू, सबके हितकारी ।। स्वामी ।।
शेष शार□ा नित गुण गावे, महिमा अति भारी।।ॐ।।
तन पर चोला गेरु रंग का, सिर पै जटाधारी ।। स्वामी ।।
कर कमलों में लाठी सोहे, मोहे नर नारी।।ॐ।।
अपने गुरु के निज वचनों को, घर घर पहुँचाया ।। स्वामी ।।
भूले भटके □ीन जनों को, सत□मार्ग लाया।।ॐ।।
अधम उध□ारन कष्ट निवारन, भक्तन भयहारी ।। स्वामी ।।
भाव जल तारन पार उतारन, कारन □ेह धारी।।ॐ।।
□ेश वि□ेश में भ्रमण करके, भक्ती फैलाई ।। स्वामी ।।
सोऽहम□शब□ का मन्त्र □ वह, ज्योति □िखलाई।।ॐ।।
अजर अमर और अज अविनाशी, घट घट के ज्ञाता ।। स्वामी ।।
कण कण में तुम सर्व व्यापक, पूरण गुरु □ाता।।ॐ।।
परम उ□ारी पर उपकारी, अमरापुर वासी ।। स्वामी ।।
शरण तुम्हारी जो जन आवे, पावे सुख रासी।।ॐ।।
स्वामी टेऊँराम के कृपा पात्र, तुम हो भक्ती भण्डार।। स्वामी ।।
गुरु भक्त बन गुरु भक्ती का, खूब किया प्रचार।।ॐ।।
पूरण गुरु की पूरी आरती, जो जो नर गावे ।। स्वामी ।।
पाप ताप सन्ताप मिटाकर, पूरण प□ पावे।।ॐ।।

ओ३म□जय गुरु सर्वानन्□, स्वामी जय गुरु सर्वानन्□,
धर्म कर्म का □ उप□शा, काटे यम के फन्□।।ॐ।।

सद्‌गुरु स्वामी शान्ती प्रकाश महाराज जी की आरती

ओ३म जय गुरु शान्ति प्रकाश, स्वामी जय गुरु शान्ति प्रकाश,
प्रेम के सागर सतगुरु मेरे, मन में करो निवास।।ॐ।।

मात पिता थे धर्म की मूर्ति, उपजा पूत सपूत ।। स्वामी ।।
बचपन में ही मन में जागी, कृष्ण दर्श की प्यास।।ॐ।।
स्वामी टेऊँराम के श्री चरणों में, जीवन सौंप दिया ।। स्वामी ।।
उनकी दया से परम पद पाया, अद्‌भुत किया विकास।।ॐ।।
वेद वाणी और गुरु वाणी का, पाया ज्ञान भण्डार।। स्वामी ।।
प्रेम प्रकाश मण्डल में चमके, सूरज सम सुख रास।।ॐ।।
देश-विदेश में भ्रमण करके, सबको मोह लिया ।। स्वामी ।।
सतनाम साक्षी मन्त्र जपाकर, काटी यम की फास।।ॐ।।
देश धर्म की रक्षा के हित, सब कुछ त्याग दिया ।। स्वामी ।।
दीन जनों की सेवा में ही, पाया परम हुलास।।ॐ।।
एकादशी और गौ सेवा का, खूब किया प्रचार ।। स्वामी ।।
कण कण में श्री कृष्ण को देखा, किया भेद भ्रम नाश।।ॐ।।
जो जो दर्श करे सद्‌गुरु का, मन में रख विश्वास ।। स्वामी ।।
आशा उसकी पूर्ण होवे, कारज होवन रास।।ॐ।।
पूर्ण श्रद्धा से जो प्रेमी, आरती यह गावे ।। स्वामी ।।
सुख सम्पत्ति और सुमति पावे, अमरापुर हो वास।।ॐ।।

ओ३म जय गुरु शान्ति प्रकाश, स्वामी जय गुरु शान्ति प्रकाश,
प्रेम के सागर सतगुरु मेरे, मन में करो निवास।।ॐ।।

सद्गुरु स्वामी हरि□ासराम महाराज जी की आरती

ओ३म□जय गुरु हरि□ासराम, स्वामी जय गुरु हरि□ासराम,
सतचित आनन्□ ब्रह्मस्वरुपा, सर्व सुखों के धाम।।ॐ।।

अमरापुर से आए ज□गी, लेकर सत□सन्□श ।। स्वामी ।।
अमृतवाणी स□ सुख खानी, अमर किया उप□श।।ॐ।।
□ालापन से गुरु चरणों में, मनुवा तव लागा ।। स्वामी ।।
घर क□ त्यागा भया विरागा, सतगुरु र□ पागा।।ॐ।।
सतगुरु टेऊँराम साह□ में, अटल रखा विश्वास ।। स्वामी ।।
सतनाम साक्षी जाप जपाकर, प्रेम किया प्रकाश।।ॐ।।
सतगुरु सर्वानन्□ की सेवा, तन मन से कीनी ।। स्वामी ।।
पूर्ण गुरु की कृपा पाकर, सुरति शब□ भीनी।।ॐ।।
निर्मोही, निर्मान निःसंगी, निर्भय निष्कामी ।। स्वामी ।।
निरइच्छा ह□ जग में विचरे, सतगुरु सुख धामी।।ॐ।।
त्याग तपमय जीवन धारे, सतगुरू गुण गाया ।। स्वामी ।।
□श वि□शा सत□उप□शा, स□ क□ पहुँचाया।।ॐ।।
नभ में जल में पावक थल में, ज्य□ति तेरी जागे ।। स्वामी ।।
श्रद्धा से ज□ शरनी आए, भय ताका भागे।।ॐ।।
प्रेम भाव हृ□य में भरकर, आरती ज□ गावे ।। स्वामी ।।
सुमति प्रकाशे-स□ □ुख नाशे, मुक्ती प□ पावे।।ॐ।।

ओ३म□जय गुरु हरि□ासराम, स्वामी जय गुरु हरि□ासराम,
सतचित आनन्□ ब्रह्मस्वरुपा, सर्व सुखों के धाम।।ॐ।।